PAPER-III
KONKANI

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

   (Name) _____

2. (Signature) _____

   (Name) _____

OMR Sheet No. : .....
(To be filled by the Candidate)

Roll No. | | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No._____
(In words)

J A 0 8 5 1 7

Time : **2 ½** hours] [Maximum Marks : **150**

Number of Pages in this Booklet : **16** | Number of Questions in this Booklet : **75**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. This paper consists of seventy five multiple-choice type of questions.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
   (iii) After this verification is over, the Test Booklet Number should be entered on the OMR Sheet and the OMR Sheet Number should be entered on this Test Booklet.
   (iv) The test booklet no. and OMR sheet no. should be same. In case of discrepancy in the number, the candidate should immediately report the matter to the invigilator for replacement of the test booklet / OMR Sheet.
4. Each item has four alternative responses marked (1), (2), (3) and (4). You have to darken the circle as indicated below on the correct response against each item.
   Example : ① ② ● ④
   where (3) is the correct response.
5. Your responses to the items are to be indicated in the **OMR Sheet given inside the Booklet only.** If you mark your response at any place other than in the circle in the OMR Sheet, it will not be evaluated.
6. Read instructions given inside carefully.
7. Rough Work is to be done in the end of this booklet.
8. If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the OMR Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, such as change of response by scratching or using white fluid, you will render yourself liable to disqualification.
9. You have to return the Original OMR Sheet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall. You are, however, allowed to carry original question booklet on conclusion of examination.
10. **Use only Black Ball point pen.**
11. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**
12. **There is no negative marks for incorrect answers.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. इस पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. इस प्रश्न-पत्र में पचहत्तर बहुविकल्पीय प्रश्न हैं ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए पुस्तिका पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चेक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
   (iii) इस जाँच के बाद प्रश्न-पुस्तिका का नंबर OMR पत्रक पर अंकित करें और OMR पत्रक का नंबर इस प्रश्न-पुस्तिका पर अंकित कर दें ।
   (iv) प्रश्न पुस्तिका नं. और OMR पत्रक नं. समान होने चाहिए । यदि नंबर भिन्न हों, तो परीक्षार्थी प्रश्न-पुस्तिका / OMR पत्रक बदलने के लिए निरीक्षक को तुरंत सूचित करें ।
4. प्रत्येक प्रश्न के लिए चार उत्तर विकल्प (1), (2), (3) तथा (4) दिये गये हैं । आपको सही उत्तर के वृत्त को पेन से भरकर काला करना है जैसा कि नीचे दिखाया गया है :
   उदाहरण : ① ② ● ④
   जबकि (3) सही उत्तर है ।
5. प्रश्नों के उत्तर **केवल प्रश्न पुस्तिका के अन्दर दिये गये OMR पत्रक पर ही** अंकित करने हैं । यदि आप OMR पत्रक पर दिये गये वृत्त के अलावा किसी अन्य स्थान पर उत्तर चिह्नांकित करते हैं, तो उसका मूल्यांकन नहीं होगा ।
6. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
7. कच्चा काम (Rough Work) इस पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर करें ।
8. यदि आप OMR पत्रक पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, जैसे कि अंकित किये गये उत्तर को मिटाना या सफेद स्याही से बदलना तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
9. आपको परीक्षा समाप्त होने पर मूल OMR पत्रक निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और परीक्षा समाप्ति के बाद उसे अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें । हालांकि आप परीक्षा समाप्ति पर मूल प्रश्न-पुस्तिका अपने साथ ले जा सकते हैं ।
10. **काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।**
11. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**
12. **गलत उत्तरों के लिए कोई नकारात्मक अंक नहीं हैं ।**

KONKANI
कोंकणी

Paper – III
प्रश्नपत्र – III

Note : This paper contains **seventy five (75)** objective type questions of **two (2)** marks each. **All** questions are compulsory.

नोट : इस प्रश्नपत्र में **पचहतर (75)** बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न के **दो (2) अंक** है । सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

सुचोवण्यो : (i) ह्या प्रश्नपत्रांत वट्ट **पाऊणशे (75)** भौपर्यायी जापेचे प्रश्न आसात.

(ii) सगळ्या प्रश्नाच्यो जापो बरोवंच्यो.

(iii) दर एका प्रश्नाच्या सारके जापेक **दोन (2)** गुण दवरल्यात.

(iv) दर एका प्रश्नाची जाप ताचे सकयल दिल्ल्या (1), (2), (3), (4) ह्या आंकड्यातल्या फावो त्या आंकड्याचेर कुरू करची.

1. 'नाटकावरींच कादंबरीय घटनाप्रधान आनी नाट्यमय आसूंक शकता'
वयर दिल्लें विधान हांतूतल्या कोणाचें ?

(1) डॉ. ऑल्वीन गोमिश (2) डॉ. मनोहरराय सरदेसाय
(3) डॉ. किरण बुडकुले (4) प्रियदर्शिनी तडकोडकार

2. (अ) 'वैदर्भी रीति, ही सुकुमार शैली तांतूत प्रतिभेचो विलास जाल्लो दिसता'
(ब) 'समास, ओज आनी कांती ह्या गुणानी भरिल्ली गौडी रीति ही आदींमदीं अतिभडक उतरांची लेगीत जाता'
वयर दिल्लीं विधानां _____

(1) (अ) बरोबर (ब) चूक (2) (अ) चूक (ब) बरोबर
(3) (अ) आनी (ब) दोनूय चूक (4) (अ) आनी (ब) दोनूय बरोबर

3. 'भिकरो' ही कथा कोणाची आनी खंयच्या कथाझेल्यांतली ?

(1) पुंडलीक नायक - 'मुठ्य' (2) महाबळेश्वर सैल - 'तरंगां'
(3) गजानन जोग - 'रुद्र' (4) देविदास कदम - 'कांदळां'

4. "२० व्या शतमानांतल्या ८ व्या दसकांतल्या कवयित्रींच्या कवितांच्या स्वरूपांत बदलिल्लें रूपडें दिसलें तरी तिच्यो बायलमनशेच्यो कुरवो पुसुंक ना म्हणपाचें कळटा" – हें मत हांतूतल्या खंयच्या पुस्तकातल्या खंयच्या लेखातले जावन आसा.

(1) कोंकणी समीक्षण तत्व आनी प्रयोग – लळीत साहित्य म्हळ्यार कितें ?
(2) कोंकणी साहित्य-मज्जिरी (नदर आनी नियाळ) – कोंकणी अस्तुरी साहित्यिकांच्या साहित्यातली अस्तुरी
(3) कोंकणी भास, साहित्य आनी संस्कृताय – कोंकणी कवितेचे अंत: प्रवाह
(4) साहित्य सुवाद – कोंकणीच्या आंगणातली सोबीत रांगोळी

5. ‘पानां लजतात, लीप दीप दोळे, दनपार हळदुवीच पिंगशी कशी, पिंगशा सावळ्यांची हिप्पीण’ अशो प्रतिमा हांतूतल्या खंयच्या कवीच्या कवितानी मेळटात ?

(1) प्रकाश पाडगांवकार (2) रमेश वेळुस्कार

(3) सु.म. तडकोडकार (4) शंकर रामाणी

6. ‘प्रस्न’ ह्या एकांकीकेत ‘हांव परिक्षेंत पास जायत कांय ना म्हूण सांगत देव ?’ अशें कोण कोणाक विचारता ?

(1) चली बायलेक विचारता (2) चली कृष्णमामाक विचारता

(3) चली दोनोराक विचारता (4) चली काकाक विचारता

7. इ.स. १६५८-५९ ह्या वर्सा गोंयच्या रायतूर कोटांत उजवाडा आयिल्लो हांतूतलो ग्रंथ खंयचो ?

(1) सांत-आंतोनिची अचर्यां (2) वनवळ्यांचो मळो

(3) सगळ्या वरूसाचें वांजेल (4) जिवीत रुखाचीं अमृत फळां

8. ‘साहित्यिक’ तांच्यो ‘साहित्यकृती’ आनी त्या संबंदान डॉ. मनोहरराय सरदेसाय हांणी केल्लीं विधानां हांच्यो फावो त्यो जोड्यो लायात.

a.	हें कवीत बायलांचो घरसंसार उजलायता	i.	शीला नायक	vi.	‘चंवर’
b.	मनशाचें निबरपण तशेंच मनशाचें दुबळेपणूय ती दाखयता	ii.	विजयाबाय सरमळकार	vii.	‘सासाय’
c.	सकाळच्या पारार चिंतनाची चित्रां रंगवणी कवी	iii.	बाकीबाब बोरकार	viii.	‘चान्याचे राती’
d.	थोड्याच चिमट्यानी मनभुलवणी चित्रां चितारता	iv.	जयमाला दणायत	ix.	‘ओली सांज’
		v.	माधव बोरकार	x.	‘गोंटलां’
				xi.	‘कवासो’

	a	b	c	d
(1)	ii-xi	iii-vii	i-ix	v-xi
(2)	iv-viii	ii-xi	v-vii	i-x
(3)	iii-xi	i-ix	ii-vi	v-vii
(4)	ii-x	iv-xi	v-vi	i-ix

9. _____ ह्या वर्सा मनोहरराय सरदेसाय हांणी ‘नबत’ हें हाताळें काडलें.

(1) १९४० (2) १९४५

(3) १९४२ (4) १९४४

10. 'कोंकणी एकांकीकां' हो एकांकी झेलो हांतल्या कोणाचो ?

(1) किसन कामत (2) चंद्रकांत पार्सेकार

(3) विनय सुर्लकार (4) शंकर भांडारी

11. 'अनीत' नांवांचो सात नाटकुल्यांचो झेलो उजवाडणी हांतूतलो कोण ?

(1) आयरिन कार्दोझ (2) तोमाझीन कार्दोझ

(3) पा. फ्रेडी डिकोश्ता (4) सेझार देमेल

12. (अ) स्वनिमांक आपलोच अर्थ आसता जाल्यार पदिमांक स्वताचो अर्थ नासता.

(ब) भास म्हळ्यार ध्वनिरूप वेवस्था आसूनय तिची मांडावळ करपी वेवस्था ध्वनिरूप नासता.

(1) (अ) वाक्य बरोबर (ब) वाक्य चूक. (2) (अ) वाक्य चूक (ब) वाक्य बरोबर.

(3) (अ) आनी (ब) ही दोनूय वाक्यां बरोबर. (4) (अ) आनी (ब) ही दोनूय वाक्यां चूक.

13. 'कर्णपर्व' ह्या नाटकांत "मनीस मनीसपण विसरता तेन्ना मोनजातीपरसय पाश्ट दशेक पावता आनी तेन्ना हें अशें घडटा." अशें कोण म्हण्टा ?

(1) अर्जुन (2) कुंती

(3) कृश्ण (4) युधिष्ठिर

14. 'मीर्ग' हें नेमाळे गोंयाभायल्या खंयच्या वाढारातल्यान उजवाडा येतालें ?

(1) मुंबय (2) वर्धा

(3) मेंगलोर (4) कारवार

15. "लोहियान (गोंयात) फकत क्रांतीचीच सुरूवात करूंक ना तर कोंकणी कवितेंत नकळ्टना क्रांती-कवितांची भर घाल्या"

कोंकणी कवितेसंबंदान वयर दिल्लें विधान कोणे म्हळां ?

(1) डॉ. मनोहरराय सरदेसाय (2) प्रियदर्शिनी तडकोडकार

(3) डॉ. किरण बुडकुले (4) राजय पवार

16. 'सुमन कोंकणी नवलकाणयेंतलें एक आगळे वेगळें तांकीवंत आनी तेजवंत पात्र' अशे खंयच्या आनी कोणाच्या नवलकाणयेतल्या पात्राविशीं म्हळां ?

(1) पाषाणकली - ज्योती कुंकळकार (2) निर्बळा - हेमा नायक

(3) काळी गंगा - महाबळेश्वर सैल (4) दिका - देवीदास कदम

17. ‘कोंकणीक अप्रतिम शब्दकळा दिल्ले कवी कोण ?’ जांचेविशी भौ. बाकीबाब बोरकरान “जी भास साहित्याच्या प्रांतात आजतागायत येवंक नाशिल्ली तो हाका लागून आतां साहित्यांत प्रतिष्ठा जोडूंक लागळ्या” अशें म्हळां ?

(1) आग्नेलराव ब्रागांझ (2) शंकर रामाणी

(3) र.वि. पंडीत (4) रमेश बेळुस्कार

18. ‘आतां वेळ आयला
ही वाल मुळासकट हुमटावन
हुसऱ्याच्या दारान लावपाचो
त्या दारान तोय वाट पळेता वालीची
आपल्या जीवाचो माटोव करून’

ह्यो कवितेतल्यो वळी हांतूतल्या खंयच्या कवयित्रीच्या कवितेताल्यो आसात ?

(1) नयना आडारकर (2) नूतन साखरदांडे

(3) माया खरंगटे (4) ग्वादालूप डायस

19. (अ) ‘हुंवार’ ही घटीत-कल्पिताची सुंदर जोड घालपी कादंबरी अशें म्हणू नज.

(ब) ‘सुणें माजर हांसता’ ह्या एकांकीकेचें स्वरूप लघुनाटकावरी आसा.

(क) ‘वळेसरांतल्या’ चडावत निबंदांक रूपक कथा वा नितिकथांचो बाज आसा.

(ड) ‘करबट’ ह्या निबंद झेल्यातल्या निबंदात फकत विचारप्रवर्तक निबंद आसात अशें म्हणू नज.

(1) वयर दिल्या विधानातलें (अ) बरोबर (ब) (क) आनी (ड) चूक

(2) वयर दिल्या विधानातलें (ब) बरोबर (अ) (क) आनी (ड) चूक

(3) वयर दिल्या विधानातलें (अ) चूक (ब) (क) आनी (ड) बरोबर

(4) वयर दिल्या विधानातलें (ब) चूक (अ) (क) आनी (ड) बरोबर

20. ‘क्विंटीलियनाचें समीक्षणात्मक भाश्य चड करून उलोवण्याचे शैलीचेर केंद्रीत आसा.’ कारण _____

(1) बरपात डौल-वोज आसचे अशे तांका दिसताले.

(2) ताच्या काळार उलोवप आनी बरप हांच्या शैलीमदीं मुजरत फरक करताले.

(3) उलोवण्यात बरपासारकेच गुण आसतात अशे तांका दिसताले.

(4) तांच्या कालार उलोवप आनी बरप हांच्या फाटी निखटी सैमीक प्रेरणा मानताले.

21. परिपूर्ण नाटयकृतींत ॲरीस्टोटल _____ गुणांचो आस्पाव करता.

(1) २ (2) ४

(3) ६ (4) ५

22. ‘संसारातले वास्तव म्हळ्यार अंतीम ‘सता’ ची प्रतिकृती’ अशें कोण म्हण्टा ?

(1) ॲरीस्टोटल (2) प्लेटो

(3) सोक्रेटीस (4) प्लोटीनस

23. ‘कोंयसांवालीं गोरवां’ ही दामोदर मावजो हांची कथा तांच्या खंयच्या कथाझेल्यांत आस्पावल्या ?

(1) रूमडफूल (2) भुरगीं म्हगेली तीं

(3) जागरणां (4) गांथन

24. ‘ह्या कवीची कविता सोदूंक गेल्यार तिचे तीन वांटे घालूंक येतात. पयलो कवीच्या निजी अणभवांचो. व्यक्तिनिश्ट,, दुसरो सामाजिक जाणविकायेचो-मसश्टीनिश्ट आनी तिसरो प्रकृतिनिश्ट वा रूपनिश्ट’ ही उतरां खंयच्या कवीसंबंदान काडल्यात ?

(1) मनोराय नायक (2) जे.बी. मोरायश

(3) ऑलिविन्यु गोमिश (4) पांडुरंग भांगी

25. उजवाडणीच्या वर्साप्रमाण सकयल दिल्ल्या पुस्तकांचो क्रम लायात.

(1) माती, तनरज्योती, आंगणी नाचता मोर मोरया, हिरण्यगर्भ

(2) माती, आंगणी नाचता मोर मोरया, हिरण्यगर्भ, तनरज्योती

(3) हिरण्यगर्भ, आंगणी नाचता मोर मोरया, माती, तनरज्योती

(4) आंगणी नाचता मोर मोरया, तनरज्योती, हिरण्यगर्भ, माती

26. प्रा. के.आर. वसन्त मणी हांगेलो कथाझेलो हांतूतलो खंयचो ?

(1) काणयां घोस (2) कथाश्टक

(3) भांगरा दांत (4) आयामी

27. आकाशवाणी ‘मुंबय’ केंद्रावेल्यान _____ वर्सासावन कोंकणी कार्यावळी सुरू जाल्यो.

(1) १९४५ (2) १९५२

(3) १९५५ (4) १९५७

28. बारदेशी-साश्टींत तीन हजार कोंकणी उतरांचो कोश हांतूतल्या कोणे बरयलो ?

(1) काजमीर क्रिस्तोवां द नाझारे

(2) सेबाश्तीयांव सालवादोर द जेझूस दियश

(3) आंत अदुआर्द ब्रून द सौज

(4) डॉ. जुझे जेर्सन द कुञ्ज

29. ‘समाजाचो दिवो’ हें नेमाळें हांतूतल्या खंयच्या प्रदेशांतल्यान उजवाडा येतालें ?

(1) मुंबय (2) कारवार

(3) मंगळूर (4) कोचीन

30. “ही भास संस्कृतांतल्यान आयल्या, ती मराठीची भयण, धूव न्हय. कोंकणी ही मराठीवेल्यान घडल्या अशें कशेंच थारना तर उरफाटें अशेंच थारता कीं त्यो भासो भयणी-भयणी आनी दोनूय संस्कृताच्यो धुवो.” अशें कोंकणी भाशेसंबंदान हांतूतल्या कोणे म्हळा ?

(1) कुन्य रिव्हार (2) फेर्नांदु लेआल

(3) रामचंद्र पांडुरंग वैद्य (4) श्रीपाद देसाय

31. ‘सगळ्या थरांतले जायते किरिस्तांव कवी कोंकणीत नवी कविता घडयताना दिसतात कारण _____’

(1) कोंकणी कवीत करुन कीर्त मेळवची अशें ताणी थारायला

(2) हिन्दू कवींसारकी कविता करची अशें तांका दिसला.

(3) कोंकणी काव्याच्या नव्या ल्हारान तांका भारायल्यात.

(4) कविता हो सगळ्यात सोपो बरपाचो प्रकार अशें ते मानतात.

32. ग.दि. माडगूळकर ह्या मराठी कवीचें ‘गीत रामायण’ हें काव्य _____ हांणी कोंकणीत अणकारीत केलां.

(1) प्रा. अेन.अेन. आनंदन (2) बी.बी. बळिगा

(3) आर.के. राव (4) नारायण बादोळकार

33. ‘पारंपरिक कोंकणी बालगीतां पुजावन ती उजवाडा हाडपी हांतूतलो कोण’ ?

(1) जयंती नायक (2) कमलाकर दत्ताराम म्हाळशी

(3) शाम वेरेंकार (4) तुकाराम रामा शेट

34. कोंकणी नेमाळी आनी ताजे उजवाडणी वर्ष हांच्यो फावो त्यो जोड्यो लायात.

a.	धि गोवा मेल	i.	१९४६
b.	कोंकणी दायज	ii.	१९५८
c.	उदेन्तेचें नखेत्र	iii.	१९४०
d.	पयणारी	iv.	१९३५
		v.	१९१९

	a	b	c	d
(1)	v	ii	i	iii
(2)	iv	i	ii	v
(3)	iii	iv	v	ii
(4)	i	ii	iv	i

35. 'नवें गोंय' हें _____ नेमाळें आशिल्लें.

(1) दिसाळें (2) पंद्रशी

(3) म्हयनाळें (4) वर्सुकी

36. "थंय तेच बागी माजार आनीक एक झाड
आपलो सुफळ विस्तार फांकयतालें
आनी ताका म्हुणत 'जीवाचें झाड'.
ताचे फळ खेलें तर, मनश्याक नासलें
न्हयच मर्ण, बगर म्हातार पिराय लेगून:
सदाकाळ तरनेपण वसचे आसलें"

वयर दिल्ल्यो काव्यातल्यो वळी कोंकणीच्या खंयच्या मोडीची देख जावन आसा ?

(1) साश्टी मोडी (2) कोडियाळी मोडी

(3) मंगळूरी मोडी (4) बारदेशी मोडी

37. 'वेळघडी' ही ए.टी. लोबो हांची कन्नड लिपीतली कोंकणी कादंबरी कितल्या वाट्यांनी प्रसिद्ध जाल्ली आसा ?

(1) तीन (2) पांच

(3) स (4) दोन

38. हांतूतलो खंयचो शब्द कोंकणी बरोवपाच्या नदरेन बरोबर आसा ?

(1) अतींद्रीय (2) अतिंद्रिय

(3) अतिद्रिय (4) अतीद्रिय

39. 'मंगळुरातले कोंकणी भाशेचेर कानडी आनी मल्ल्याळी भाशेचो प्रभाव पडलो आनी कोचिनांतले कोंकणी भाशेचेर मल्ल्याली आनी कानडी भाशेचो प्रभाव पडलो.'

(1) वयर दिल्या विधानातलो पयलो वाटो बरोबर दुसरो चूक

(2) वयर दिल्या विधानातलो पयलो वाटो चूक दुसरो बरोबर

(3) वयर दिल्ले पुराय विधान बरोबर

(4) वयर दिल्ले पुराय विधान चूक

40. 'वोगोत' हें उतर मुळावे खंयच्या भाशेंतलें ?

(1) कन्नड (2) अरबी

(3) फारसी (4) हिन्दी

41. ‘मुंडा’ ही भास _____ हे भाशे कुळांतली आसा ?

(1) इंडो-आर्यन (2) द्रविड़

(3) ऑस्ट्रिक (4) टिबेटो-बर्मन

42. ‘गोंयची गावडी बोली आनी काणकोणची बोली हांचो अभ्यास _____ ह्या म्हालगड्यान केला.’

(1) डॉ. अ.म. घाटगे (2) डॉ. मॅथ्यु आल्मैदा

(3) प्रा. से.मा. बोर्जिस (4) केलीस्यू कार्दोज

43. ‘गाय आनी पाडूक तण खाताली’

वयर दिल्या वाक्यातल्या क्रियापदाक _____ म्हण्टात

(1) भोववचनी (2) पुरुषलिंगी भोववचनी

(3) स्त्रीलिंगी भोववचनी (4) नलिंगी भोववचनी

44. भासविज्ञानांत स्वनीम दाखोवपाक नादाचे कुरवे भोंवतणी _____ अशी कुरु करतात

(1) [i] (2) [u]

(3) // (4) [||:]

45. कोंकणीत ‘फ’ हें व्यंजन _____ ह्या प्रकारांत मोडटा.

(1) दांतयीं व्यंजना (2) ओंटयीं व्यंजना

(3) ताळवेचीं व्यंजना (4) दांत-ओंटयी व्यंजना

46. ‘घांतवांत अखेरच्या अवयवांतलो लांब स्वर, ताका स्वर आसलेलो प्रत्यय लायल्यार मोटवो जाता.’ ह्या स्वर संधीच्या नेमान सकल दिल्लें खंयचें उतर मोडटा ?

(1) बडयो (2) काणयो

(3) शिरो (4) जळ्वो

47. भारतीय साहित्यात घटीत कथा म्हणून _____ ह्या कथेचें नाव घेतात.

(1) कादंबरी (2) वासवदत्ता

(3) हर्षचरित (4) दशकुमारचरित

48. “पोट्टं भरंति सउणा वि माउअ अप्पणो अणुव्विगा

पोटभरताति सवणी पासुनु मायोनो ! आपण विघ्न नासताना”

ह्यो वळी खंयच्या पोन्न्या काव्यग्रंथांतल्यो आसात ?

(1) कोंकणी मंदाकिनी (2) गाथा सप्तशती

(3) रामायण (4) सीता शुद्धी

49. ‘हाणपेट’ नांवाचो धर्मीक लोकविधी हांतूतल्या खंयच्या वाठारांत जाता ?

(1) फोंडे (2) वाळपय

(3) काणकोण (4) सांगे

50. कवितेतल्यो वळी, कवी आनी त्या कवितेचे शीर्षक हांच्यो फावो त्यो जोड्यो लायात.

a.	पर्जळाच्या वस्तुं भितर फांकलो पर्जळ मुक्तवंत	i.	सांज	vi.	ऑलिव्हीन गोमिश
b.	मळब भिंगाचो नाच वाट भिंगाचो साज	ii.	उलयतले मोने	vii.	शंकर रामाणी
c.	शीतळ सुटलां वारें पानांत रूप्या थीकार लजती झाडां	iii.	दायज जावन भक्ताचे	viii.	बा.भ. बोरकार
d.	निळ्या जळार सवणाऱ्याचे थव्यार थवे धवेच धवे	iv.	हांव आनी तू	ix.	मनोहरराय सरदेसाय
		v.	येतले दीस म्होवेच म्होवे	x.	बी.ओ. मेन्दीस
				xi.	पांडुरंग भांगी

	a	b	c	d
(1)	ii-ix	i-viii	v-vi	iii-x
(2)	v-xi	i-x	ii-vi	ii-viii
(3)	iii-x	i-xi	ii-vi	v-viii
(4)	i-vii	iv-vi	v-xi	iii-x

51. ‘बृहत्कथामंजिरी’ हो कथाग्रंथ हांतूतल्या कोणाचो ?

(1) क्षेमेंद्र (2) गुणाढ्य

(3) बुधस्वामी (4) सुबंधु

52. ‘सुंवारी’ हो कविता झेलो हांतूतल्या कोणाचो ?

(1) अभिजीत (2) गजानन रायकार

(3) सुहास दलाल (4) नयना सुर्लकार

53. साहित्यशास्त्रकार आनी तांचे ग्रंथ हांच्यो फावो त्यो जोड्यो लायात.

a.	उद्भट	i.	अलंकार रत्नाकर
b.	रुद्रट	ii.	अलंकार सर्वस्व
c.	शोभाकरमित्र	iii.	काव्यालंकार संग्रह
d.	रूय्यक	iv.	काव्यालंकार सूत्रवृत्ती
		v.	काव्यालंकार

	a	b	c	d
(1)	ii	i	iv	iii
(2)	iv	iii	ii	v
(3)	v	iv	i	iii
(4)	iii	v	i	ii

54. जयंती नायक हांणी लोकगीत-काणयांचे संकलन खंयच्या माथाळ्याखाल केलां ?

(1) तळ्य डखलमी खेळ्यांनी (2) कणेर खुंटी नारी

(3) रथा तुज्यो घुडयो (4) नागशेराचे सूर

55. "मोगाळ कातार्चे स्तवन आपले स्नेआळे कांतेचे
आनी मुंजुळ गायन जशें दिसता, तसो कोणाक
आनंद दित काय ? तरी देवाकांते मारिये, समस्तीं
होऊनु निर्मिली, ह्या निमितीं हो येकांग्र बोलणीं,
तुज्या पवित्र चरणांक मजी म्हणूं, आनी देवाचीशीं
विवेखून तुज्या अनुपमा मानाक अर्पच्याक कायदो
असो मानितां, ताजो आधार कर म्हण प्रार्थितां....."

वयलो हो उतारो कोणा बरोवऱ्याच्या ग्रंथांतल्यान घेतलां ?

(1) पाद्री मिगेल द् आल्मैदा (2) पाद्री जुआंव द् पेद्रोझ

(3) पाद्री आंतोनियु साल्दान (4) पाद्री दियोगु रिबेरु

56. सकयल्या पुस्तकांचो उजवाडणेच्या वर्साप्रमाण योग्य क्रम खंयचो ?

(1) सुंदरी, शिकारी, जुगार, देवाची खुशी

(2) जुगार, देवाची खुशी, शिकारी, सुंदरी

(3) देवाची खुशी, सुंदरी, शिकारी, जुगार

(4) शिकारी, देवाची खुंशी, सुंदरी, जुगार

57. 'वेळीप' ह्या जमातीत तांच्या बोली भाशेत 'आनूय, व्हळ्याबूय, म्हातावय' या शब्दांचो अर्थ हांतूतलो खंयचो ?

(1) व्हडली भयण, काकी, आजी

(2) व्हडलो भाव, बापायचो व्हडलो भाव, आजी

(3) आजी, आतेभाव, मामेभाव

(4) आवय, वयनी, मामी

58. 'मुळां आनी फुलां' ह्या नावान दो-मनोहरराय सरदेसाय हाणी खंयच्या पुस्तकांक प्रस्तावना बरयल्या ?

(1) काजुले (2) जैत

(3) लोकवेदाचो रूपकार (4) इसाप काणयो

59. 'बयाभावाउप्रांतचो पयलो व्हडलो कवी आनी शणै गोंयबाबाचें परंपरेत वाडलेलो. ती परंपरा जतनायेन राखपी कवी म्हूण हांतूतल्या कोणाचें नांव घेतात' ?

(1) बयाभाव (2) पांडुरंग भांगी

(3) श्रीधर काशिनाथ नायक (4) अभिजीत

60. 'मनोहरराय हांच्या' कवितेत _____ ही गजाल दिश्टी पडटा.

(1) मोगाच्यो विंगड विंगड प्रतीमा आनी गर्भीत आशय

(2) प्रखर सामाजिक जाणविकाय आनी स्फुल्लींग जागृत करपी रोसाळ ओडलायणी अशी सोपी शब्दरचना.

(3) समाजाची वास्तव चित्रां आनी पारतंत्र्यांचे चित्रण

(4) सामकी सोपी भास आनी सैमिक चित्रण

61. साहित्यकृती आनी तांतलें अस्तुरी पात्र हांची हांतूतली फावो ती जोडी खंयची ?

(1) सुमन - घणाघाय नियतीचे

(2) विमल - पृथवै नमः

(3) रोजालीन - खोल खोल मुळां

(4) गंगा - पाशाण कळी

62. _____ ह्या समाजांत 'घडशी उमाशेक' (आशाड उमास) आनी 'आसाडीक' (आशाड पुनव) ह्या दीसा गीतकाणयेचें खाशेले गायन करपाची परंपरा आसा.

(1) गावडी (2) वेळीप

(3) कुळंबी (4) धनगर

63. 'सुनापरान्त' दिसाळें खंयचो हावेस दवरून काम करतालें ?

(1) भाशावादाचे पावंडे हुपून गोंयच्या समेस्त कोंकणी भौसाची चळवळ जांवची हो हावेस

(2) गोंयच्या सगळ्या वाचव्यांमेरेन भाशावाद पावचो हो हावेस

(3) गोंयच्या घराघरांनी कोंकणी वाचन जावन कोंकणी ही राष्ट्रीय पावंड्यार पावची हो हावेस

(4) गोंयच्या फुडल्या पिळगेक गोंयची अस्मिताय कळची हो हावेस

64. 'सरस्वती कंठाभरण' हो काव्यशास्त्रावेलो ग्रंथ हानूतल्या कोणाचो ?

(1) वामन (2) भोज

(3) विश्वनाथ (4) हेमचंद्र

65. 'गजलप्रभा' हो गजल कविताझेलो कोणाचो ?

(1) राजय पवार (2) प्रभाकर नाडकर्णी

(3) आनंद वर्टी (4) नागेश करमली

66. "थांबो नासतां दुकां गाळून भोगशी
सासण ख्यास्त, जी जोडल्याय तुजे खोश्येन
जिचो शेवट कदींच तूं ना देखशी ।
जर एक जळार, काडून आपले मिशेन
हजारां वर्सानी, एक एक कणी
हो संवसार ना करीत अशे भाशेन"

वयर दिल्ल्यो वळी खयंच्या म्हाकाव्यातल्यो आसात ?

(1) कंबरामायण (2) पॅराडायज लॉस्ट

(3) एव आनी मरी (4) मणिमेखलै

67. 'हें जनेल म्हजी उदेंत जाल्यार मोगिका म्हजी चंद्रिम' ह्या वाक्यात खंयचो अलंकार आसा ?

(1) रूपक (2) उत्प्रेक्षा

(3) दृष्टान्त (4) अपन्हुति

68. निबंद बरोवपी आनी तांची निबंद बरोवपाची शैली हांच्यो फावो त्यो जोड्यो लायात.

a.	बाकीबाब बोरकार	i.	भावात्मक
b.	अ.ना. म्हांबरो	ii.	कथात्मक
c.	शीला कोळंबकार	iii.	व्यंगात्मक
d.	लक्ष्मणराव सरदेसाय	iv.	वर्णनात्मक
		v.	प्रासादिक

	a	b	c	d
(1)	ii	i	v	iii
(2)	iv	v	i	ii
(3)	v	iii	i	ii
(4)	iii	iv	i	ii

69. 'काले गेले वाले गेले' हो निबंद खंयच्या निबंद झेल्यातलो आसा ?

(1) मान्नी पुनव (2) ऋतुचक्र

(3) लिखणेचे उत्फर्के (4) वेंचिल्ले खीण

70. 'आम्रपाली' ही कथा चंद्रकांत केणी हांच्या खंयच्या कथाझेल्यांतली ?

(1) बहुरत्ना वसुंधरा (2) व्हंकल पावणी

(3) अळमीं (4) आशाढ पांवळी

सकयल दिल्लो उतारो वाचून ताच्या सकयल दिल्लया प्रश्नांच्यो जापो बरयात :

व्यक्तिचे भायले भितल्ले जिणेचें दर्शन धडोवप हे ललीत साहित्याचें काम. स्थळ, काळ, इतिहास, संस्कृताय, धर्म, परंपरा असल्या जायत्या संस्कारांचें फळ म्हळ्यार व्यक्ती देखून, संसारांतले खंयचेंय साइत्य, जांव पोन्नें जांव नवें, प्रादेशिकूच आसता. प्रादेशिकताय नाशिल्लें साइत्य संवसारांत नाच म्हळ्यार जातां. रामायण, म्हाभारत सारक्या पोरण्या साइत्यांत लेगीत प्रादेशिकताय दिश्टी पडटा. टॉलस्टॉय, गोर्की, मोपासो, चेकोव्ह हांच्या कथा साइत्यांत जाल्यार प्रादेशिकताय रसरसता, प्रादेशिकतायेचें हें वेगळेपण हो कथासाइत्याचो sine qua non-गूण. प्रादेशिकतायें बगर कथा साहित्य आसूंच नज. जे मेरेन पुराय संसाराची भास एक जावंक ना, सगळ्या मनशांचो धर्म एक जावंक ना, सगळ्यांचो सभाव एक जावंक ना, रंग, रूप, आकार एक जावक नात, सगळें सैम एके तरेंचें जावंक ना ते मेरेन ललीत साइत्य प्रादेशिकूच उरतलें. ज्या दिसा हें अगणीत वेगळेपण ना जातले त्या दिसा ललीत साइत्यूय संसारांतलें ना जातलें. म्हळ्यार अशें कि हें वेगळेपण होच ललीत साइत्याचो प्राण. हो प्राण जो कथाकार खोलायेन आनी तिव्रतायेंन दिता तोच कथाकार व्हडलो. पर्ल बक, सॅमरसेट मॉम, मालरो बी बरोवपी जेन्ना आपले देश सोडून भायल्या देशांतल्या लोकांचे जिणेचेर बरयतात तेन्ना ते ते जिणेचें वेगळेपण आनी आगळेपणूच दाखयतात. गोंयकाराचे जिणेच्या दर्शनांत ताचें गोयकारपण दिसूंकच जाय. तें दिसना जाल्यार तो दोश त्या साइत्यिकाचो. होच न्याय सगळ्या प्रदेशांतल्या आनी देशांतल्या साइत्यिकांक लागू जाता. प्रादेशिक वेगळेपण समजून घेवपाची आनी तें उक्तावन दाखोवपाची ताकद साइत्यिकांत आसूक जाय. तेच भशेन विश्वात्मक (universal) अशें जें कितें जिवितांत आसा तेंय समजून घेवपाची आनी उक्तावन दाखोवपाची शक्त त्याच्यांत आसूंक जाय. म्हळ्यार अशें, साइत्यांन प्रादेशीक वेगळेपणूय आसूंक जाय आनी विधात्मक तत्त्वय आसूक जाय. वेगळें वेगळें कडलीं मनशां; भाशेन, भेसान, रुपान, रंगान वेगळीं वेगळीं दिसलीं तरूय सगळ्यांचे मुळावे गूण आनी अवगूण एकेच तरेचे आसतात. मोग, माया, दया, क्षमा, साहस, वात्सल्य तशेंच तिडक, दुस्वास, मत्सर सगळ्यांचे सारके. श्रेयाच्या आनी प्रेयाच्या कलहांत मनशाची जीण उकती जायत वता तेन्ना जें कितें मुळावें (universal) आसता तें आपशींच वयर सरता. साइत्यांत तें येवकं जाय. प्रादेशिकताय आनी विश्वात्मकता हांचे मजगतीं विरोध आसा असें समजप अजाणपणाचें लक्षण. जें खरें प्रादेशीक तेंच विश्वात्मक, कित्याक, हें विश्वात्मक उकतें जाताय प्रादेशीक मनशांतल्यान, समाजांतल्यान आनी सैमांतल्यान मनशाच्या मुळा व्या गुणांचो आनी सभावाचों कलाकाराक थाव लागल्या-बगर ताच्या साइत्यांत विश्वात्मक तत्व येनां. तें येंवचें जाल्यार ताणें आपलें मन विश्वात्मक पांवड्याचेर हाडूंक जाय. हें काम भोव कठीण. पुण विश्वात्मक साइत्य पयलें प्रादेशिकूच आसूंक जाय.

71. 'स्थळ, काळ, इतिहास, संस्कृताय, धर्म, परंपरा' ह्या संस्कारांचें फळ म्हळ्यार व्यक्ती म्हणूनूच _____ अशें म्हणूं येता'.

(1) व्यक्तिचे भायले भितल्ले जिणेचें दर्शन घडोवप हें ललीत साहित्याचे काम

(2) संवसारांतलें खंयचेंय साइत्य, जांव पोन्नें जांव नवें, प्रादेशिकूच आसता

(3) रामायण, म्हाभारत सारक्या साइत्यांत प्रादेशिकताय दिश्टी पडटा

(4) प्रादेशिकताये बगर कथा साइत्य आसूंच नज

72. 'वेगळेंपण होच ललीत साइत्याचो _____'

(1) स्वभाव (2) गुण

(3) प्राण (4) रंग

73. अजाणपणाचें लक्षण खंयचें ?

(1) श्रेयाप्या आनी प्रेयाच्या कलहांत मनशाची जीण आसा अशें समजप.

(2) प्रादेशिकताय आनी विश्वात्मकता हांचे मजगनींत विरोध आसा अशें समजप.

(3) मनशाचो मुळावो गुण आनी सभावात विरोध आसा अशें समजप.

(4) विश्वात्मक आनी प्रादेशिक साइत्यात विरोध ना अशें समजप.

74. (अ) प्रादेशिकताय नाशिल्लें साइत्य संवसारांत नाच.

(ब) प्रादेशिकताये बगर कथा साइत्य आसूं येता.

(क) गोंयकाराचे जिणेच्या दर्शनांत ताचें गोंयकारपण आसता.

(ड) जें खरें प्रादेशिक तेंच विश्वात्मक आसता.

(1) वयर दिल्ल्या विधानातलें (अ) आनी (ब) बरोबर

(2) वयर दिल्ल्या विधानातलें (ब) आनी (क) चूक

(3) वयर दिल्ल्या विधानातलें (क) आनी (ड) बरोबर

(4) वयर दिल्ल्या विधानातलें (क) आनी (ड) चूक

75. 'साइत्यांत कसलें तत्त्व' आसप गरजेचें ? अशें बरोवपी म्हण्टा ?

(1) पारंपारीक (2) सांस्कृतिक

(3) प्रादेशीक (4) विश्वात्मक

Space For Rough Work